National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2015; 1(3): 19-20
© 2015 NJHSR
www.sanskritarticle.com
Received: 29-11-2015
Accepted: 30-11-2015

जोगिन्द्र सिंह
शोध-छात्र (शिक्षाशास्त्रविभाग),
श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठम्,
नवदेहली-110016

Correspondence:

जोगिन्द्र सिंह
शोध-छात्र (शिक्षाशास्त्रविभाग),
श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठम्,
नवदेहली-110016

वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता

जोगिन्द्र सिंह

मानवता आज दो राहे पर खड़ी है। मानव धर्म के बुनियादी मूल्य यथा शांति, सौहार्द, सहिष्णुता, त्याग, प्रेम व स्नेह आज कमजोर होते जा रहे हैं। भौतिकतावाद की आंधी से आज कोई देश अछूता नहीं है। भारत भी अपवाद नहीं है। सम्पूर्ण विश्व इस अंधी दौड़ में मानवता व मानव मूल्यों को पीछे छोड़ चुका है। भारत वर्ष ने निःसन्देह आज विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में असीमित उन्नति हासिल की है। भारतीय तकनीकी संस्थानों यथा आई. आई. टी. व आई. आई. एम. ने विश्वस्तरीय वैज्ञानिकों, इंजीनियरों एवं चिकित्सकों प्रबन्धकों का निर्माण किया है जिनकी ख्याति सारे विश्व में व्याप्त है। इसी प्रकार की उपलब्धियाँ हमने अन्तरिक्ष उड़ान रक्षा तकनीक एवं परमाणु ऊर्जा क्षेत्रों में हासिल की है। भारत की गिनती इन समस्त क्षेत्रों में चुनिंदा देशों में होती है। किन्तु इस उन्नति का दूसरा पहलू निराश करने योग्य है। प्राचीन काल का गौरवमयी इतिहास जो हमारी धरोहर है हमें विश्व की प्राचीन संस्कृति का दर्जा देते हैं। हमारे उपनिषदों ने हमें ' वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सारा संसार मेरा परिवार है सिखाया है। इसके बावजूद हम सभी धर्म, क्षेत्र, जाति व यहाँ तक की भाषा के नाम पर लड़ते झगड़ते हैं। मस्जिद, मन्दिर व अन्य धार्मिक स्थान गरीबी, महामारी, कुपोषण, बेरोजगारी, सामाजिक अन्याय व अकाल से भी बड़े मुद्दे हैं। हमारे नैतिक मूल्य धर्मान्धता साम्प्रदायिकता की भेंट चढ़ चुके हैं। भारतीय अध्यात्मिकता व पतंजलि का अपरिग्रह जैसे आदर्श जो त्याग पर आधारित थे, आज कोई महत्त्व नहीं रखते। शिक्षा व मूल्यों के बीच खाई बढ़ती जा रही है। येन केन प्रकारेण स्वार्थ सिद्धि सबसे बड़े नैतिक मूल्य बन गए हैं। अहिंसा के स्थान पर आज हिंसा ही परम धर्म बनता जा रहा है। आज हम नैतिक मूल्यों व सदाचरण से दूर जा चुके हैं। जिसका उदाहरण आज कल प्रतिदिन बढ़ते अपराध है। जिनकी खबर हम अपहरण, हत्या, डकैती, बलात्कार के रूप में रोज पढ़ते हैं। आज बेशक हम महाशक्ति के रूप में उभरे हैं किन्तु हमारा चारित्रिक पतन होता जा रहा है।

" भारत सहित सारे संसार के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का सम्बन्ध नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से न होकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है। यदि शिक्षण का अर्थ हृदय और आत्मा की अवहेलना है तो उसको पूर्ण नहीं माना जा सकता .....।" - (डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, विश्वविद्यालय आयोग)

किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसके मूल्यों का प्रतिबिम्ब होता है। मूल्य विहीन जीवन अर्थहीन जीवन के समान है। मूल्य निर्माण में समाज व परिवेश को अद्वितीय स्थान प्राप्त है चूँकि व्यक्ति समाज निरपेक्ष होकर जीवन निर्वाह नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान् ईमाइल दुर्खीम का मानना है कि **" समाज का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण ताने-बाने में झलकता है। उसका भीतरी और बाहरी व्यवहार समाज की सामूहिक चेतना को दर्शाता है।"** इसलिए अनेक विचारकों ने समाज को एक नैतिक शक्ति माना है। नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को बच्चे की पाठ्यचर्या का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्र माना गया है। सम्भवतः यह आज समूचे भौतिक विकास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह विकास उन मानव मूल्यों का प्रकार्य है जिनके अभाव में कोई भी सामाजिक अन्योन्य क्रिया असम्भव होगी। स्पष्टतः मूल्य शिक्षा के बिना स्वयं शिक्षण प्रक्रिया ही अर्थहीन तथा अप्रासंगिक रह जायेगी। इसी लक्ष्य को आधार मानकर 12 सितम्बर 2002 के अपने ऐतिहासिक फैसले में मानवीय सर्वोच्च न्यायालय ने नैतिक मूल्य सम्बन्धी शिक्षा को समय की आवश्यकता बताया है।

महान् दार्शनिक प्लेटो ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है - **" शिक्षा से अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है, जो अच्छी आदतों के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करता है।"** राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के शब्दों में

" शिक्षा के सम्पूर्ण कार्य को एक ही शब्द में प्रकट किया जा सकता है वह है ' नैतिकता' अर्थात् नैतिकता व नैतिक शिक्षा वह आधार भूत तत्त्व है जिसके बिना शिक्षा को अपूर्ण कहा जा सकता है।"

आज संसार जिस तीव्र गति से प्रगति कर रहा है उस गति से यदि किसी चीज में गिरावट आई है तो वह है नैतिक मूल्यों एवं नागरिक बोध में आता तीव्र क्षरण।

प्राचीन भारतीय विद्वान् मानते थे कि समुचित नैतिक भावना और चरित्र के अभाव में मात्र बौद्धिक उपलब्धियों का कोई महत्त्व नहीं है। उनकी दृष्टि में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज थी - सदाचार, अर्थात् आचार ही उनके लिए परम धर्म था -

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्ता स्मृति एव च

मनुस्मृति में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति कम ज्ञानवान् हो पर सदाचारी हो तो वह उस व्यक्ति की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है जो विद्वान् हो पर दुराचारी है। यथा -

सावित्रीमात्रसारोऽपि वरं विप्र सुमन्त्रितः।
नायंत्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयः।।

प्राचीन भारतीय मूल्यों को प्रमुखतः चार पुरुषार्थों के रूप में लिया गया है जो ये चार पुरुषार्थ है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। सामाजिक संदर्भ की दृष्टि से धर्म अत्यन्त व्यवहारिक एवं प्रमुख मूल्य है। धर्म अपने आप में असंख्य गुणों का समुच्चय है। उन्हें निम्निलिखित रूप में प्रतिपादित किया गया है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

अर्थात् धैर्य, क्षमा, दम, चोरी न करना, शुचिता, इन्द्रिय संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना ये धर्म के दस लक्षण हैं।

आधुनिक समय के जैन आचार्यों ने भी मूल्य शिक्षा के महत्त्व को बताया है कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के लिए तथा निषेधात्मक भावों को दूर करने के लिए आज मूल्य शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। नैतिक मूल्यों के सम्बन्ध में आचार्य तुलसी महोदय ने नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर बल दिया है। यथा -

अभयं मृदुता सत्यं आर्जवं करुणा धृतिः।
अनाशक्तिः स्वावलम्बः स्वशासनं सहिष्णुता।।
कर्त्तव्यनिष्ठता व्यक्तिगतसंग्रहसंयमः।
प्रामाणिकत्वं यस्मिन् स्युर्नीतिमानुच्यते नरः।।

इसी अनुरुप राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, अस्तेय व बुरा न बोलना, बुरा न सुनना, बुरा न देखना इनको नैतिक मूल्य मानते थे। बौद्ध धर्म में अष्टांग मार्ग द्वारा नैतिक मूल्यों का सम्पोषण किया गया है। जैन धर्म द्वारा अहिंसा, किसी को कष्ट न पहुँचाना, जियो और जीने दो, शांति, बंधुत्व, सदाचार, शाकाहार इत्यादि को प्रमुख मूल्य माना गया है। इसाई धर्म ने भी सत्य, अहिंसा, भाईचारा, दूसरों की गलतियों को क्षमा करना, परहित इत्यादि मूल्यों का अवलम्बन करके सामाजिक शांति की परिकल्पना पेश की। इस्लाम धर्म में समानता और भाईचारे का सन्देश दिया गया। विश्व के प्रत्येक धर्म ने सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों को मानवीय सृष्टि का आधार माना है।

वस्तुतः शिक्षा के केन्द्र में नैतिक एवं सामजिक मूल्यों का विकास होना चाहिए था परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में ऐसा दिखाई नहीं पड़ता। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था - **" अब तक हम पिंजरे की सजावट में लगे रहे परन्तु भीतर का पक्षी भूखा ही रहा, यह बात इतने वर्षों बाद आज भी सत्य है।"** डॉ. जाकिर हुसैन का भी यह मत था - **" हमें प्राविधिक के लिए नैतिकता का बलिदान नहीं देना चाहिए, अपितु प्राविधिक को इस भाव तथा पर्यावरण में प्रस्तुत करना चाहिए ताकि वह उच्च मानव मूल्यों को शक्तिशाली व मजबूत करने का साधन बन जाये।"** इस सम्बन्ध में महान् दार्शनिक रास के ये शब्द सारगर्भित है - **" आज अधिकाधिक विचारशील लोगों को यह विश्वास हो गया है यदि हम शिक्षा द्वारा उच्च कोटि की सभ्यता और संस्कृति का निर्माण करना और उसको बनाए रखना चाहते हैं एवं कुछ समय के बाद होने वाली पशुता के प्रदर्शन से इसकी रक्षा करना चाहते हैं तो शिक्षा को नैतिकता पर आधारित किया जाना आवश्यक है।"**

अतः वर्तमान समय में नैतिक शिक्षा व नैतिक मूल्यों की अत्यधिक आवश्यकता है इसमें सन्देह नहीं है।

सन्दर्भग्रन्थ

1. नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध, धनंजय जोशी, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दरिया गंज, नई दिल्ली, 2005
2. नैतिक शिक्षा, हरिश्चन्द्र व्यास, कैलाश चन्द्र व्यास, सत्साहित्य प्रकाशन, चावड़ी बाजार, नई दिल्ली
3. मूल्य शिक्षा, रश्मि चतुर्वेदी, डॉ. हेमन्त खण्डाई, एस. बी. नागिया, ए. पी. एच. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दरिया गंज, नई दिल्ली, 2011
4. मूल्य शिक्षा और समाज, नत्थुलाल गुप्ता, नमन प्रकाशन, दरिया गंज, 2005
5. शिक्षा जगत के लिए जरुरी है नया चिन्तन, आचार्य महाप्रज्ञा, जैन विश्व भारती, लाडनू, 2012
6. शिक्षा को बनाएँ, विकास और आनन्द की दीक्षा, आचार्य तुलसी, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, 2009